(i) इंटरनेट: आधुनिक युग का वरदान

आज के युग को 'सूचना तकनीक का युग' कहा जाता है, जिसमें **इंटरनेट** की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण है। इंटरनेट कंप्यूटरों का एक विशाल वैश्विक जाल है, जिसने पूरी दुनिया को एक 'ग्लोबल विलेज' में बदल दिया है।

इंटरनेट के अनेक लाभ हैं। इसने **शिक्षा** के क्षेत्र में क्रांति ला दी है; आज हम घर बैठे दुनिया के किसी भी कोने से जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। व्यापार और बैंकिंग के काम अब पलक झपकते ही ऑनलाइन हो जाते हैं। मनोरंजन के लिए फिल्में, गाने और सोशल मीडिया का उपयोग बढ़ा है। संचार के मामले में, ईमेल और वीडियो कॉल ने दूरियों को खत्म कर दिया है।

हालांकि, इंटरनेट के कुछ **नुकसान** भी हैं। इसका अत्यधिक उपयोग समय की बर्बादी और स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का कारण बनता है। साइबर अपराध और निजी डेटा की चोरी जैसी चुनौतियाँ भी बढ़ी हैं। यदि हम इंटरनेट का उपयोग अपनी प्रगति और ज्ञान के लिए सही ढंग से करें, तो यह हमारे जीवन के लिए एक महान वरदान है।

(ii) गर्मी की छुट्टी: मौज-मस्ती का समय

गर्मी की छुट्टी विद्यार्थियों के लिए साल का सबसे प्रतीक्षित समय होता है। साल भर की कड़ी मेहनत और परीक्षाओं के बाद, ये छुट्टियाँ मानसिक शांति और ताजगी लेकर आती हैं। जून के महीने में जब सूरज की तपिश बढ़ जाती है, तब स्कूलों में लंबी छुट्टियाँ दी जाती हैं।

इन छुट्टियों का आनंद लेने के लिए लोग अक्सर अपने **गांव** जाते हैं या किसी ठंडे पहाड़ी स्थान की यात्रा करते हैं। बच्चों के लिए यह समय नानी-दादी के घर जाकर कहानियाँ सुनने और आम खाने का होता है। बहुत से छात्र इस समय का उपयोग नई **कला या कौशल** सीखने में करते हैं, जैसे पेंटिंग, संगीत, नृत्य या तैराकी।

2.

(i) "शायर को उस वक्त मर जाना चाहिए जब लोग उसे पसंद करते हों, दीवाने हों।"

प्रसंग: यह कथन हरगोबिन (संवदिया) के मन में तब आता है जब वह जलालगढ़ की बड़ी हवेली की दुर्दशा और बड़ी बहुरिया की गरीबी को देखता है।

व्याख्या: इस पंक्ति के माध्यम से लेखक ने एक कड़वा सत्य उजागर किया है। लेखक का मानना है कि किसी भी कलाकार या प्रभावशाली व्यक्ति के लिए सबसे गौरवशाली समय वही होता है जब दुनिया उसकी कायल हो। यदि वह व्यक्ति अपने वैभव और सम्मान के शिखर पर रहते हुए दुनिया छोड़ देता है, तो लोग उसे हमेशा एक 'नायक' की तरह याद रखते हैं। इसके विपरीत, यदि वह अपने पतन, उपेक्षा और लाचारी के दिन देखने के लिए जीवित रहता है, तो समाज उसकी पुरानी गरिमा को भूलकर उसकी वर्तमान स्थिति का उपहास करने लगता है। यहाँ बड़ी बहुरिया के बीते हुए सुखी दिनों और वर्तमान की दरिद्रता के बीच के अंतर को इसी दर्शन से जोड़ा गया है।

(ii) “जिन्हें विश्वास न हो, वे स्वयं आकर देख जाएँ- प्राणों में घुले हुए रंग धरती पर किस तरह फैल रहे हैं, फैलते जा रहे हैं।”

प्रसंग: यह पंक्ति कहानी के उस मर्मस्पर्शी क्षण की है जहाँ मानवीय संवेदनाएँ और मातृभूमि के प्रति प्रेम का अद्भुत मिलन होता है। यह हरगोबिन की बड़ी बहुरिया के प्रति अटूट श्रद्धा और सेवा भाव को दर्शाती है।

व्याख्या: यहाँ 'प्राणों में घुले रंग' का अर्थ है—हृदय की गहरी संवेदनाएँ, त्याग, ममता और करुणा। लेखक कहते हैं कि मानवीय प्रेम और कर्तव्य की भावना केवल शब्दों तक सीमित नहीं होती, बल्कि वह व्यक्ति के आचरण में उतरकर चारों ओर (धरती पर) फैलने लगती है। जब हरगोबिन बड़ी बहुरिया का दुख बाँटने का संकल्प लेता है, तो उसके भीतर की आत्मीयता एक सकारात्मक ऊर्जा की तरह पूरे वातावरण को प्रभावित करती है। यह उन लोगों के लिए एक चुनौती है जो केवल भौतिक सुख-सुविधाओं को सच मानते हैं और मानवीय संवेदनाओं की शक्ति पर विश्वास नहीं करते।

3.

सेवा में,

प्रधानाध्यापक महोदय,

[अपने विद्यालय का नाम],

[अपने शहर का नाम]।

विषय: विद्यालय शुल्क माफ करने के संबंध में प्रार्थना-पत्र।

महोदय,

सविनय निवेदन यह है कि मैं आपके विद्यालय की कक्षा [अपनी कक्षा, जैसे- दसवीं 'अ'] का छात्र/छात्रा हूँ। मैं अपनी पढ़ाई में हमेशा अव्वल रहा/रही हूँ और पिछले वर्ष की परीक्षा में मैंने कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया था।

मेरे पिताजी एक निजी कंपनी में साधारण कर्मचारी हैं, जिनकी मासिक आय बहुत कम है। हाल ही में परिवार में कुछ आकस्मिक खर्चों के कारण हमारे घर की आर्थिक स्थिति काफी खराब हो गई है। ऐसी परिस्थिति में मेरे पिताजी के लिए मेरा विद्यालय शुल्क जमा कर पाना बहुत कठिन हो रहा है।

अतः आपसे विनम्र निवेदन है कि मेरी शैक्षणिक योग्यता और आर्थिक स्थिति को ध्यान में रखते हुए मेरा इस वर्ष का विद्यालय शुल्क माफ करने की कृपा करें, ताकि मैं अपनी पढ़ाई जारी रख सकूँ। इसके लिए मैं सदैव आपका आभारी रहूँगा/रहूँगी।

धन्यवाद।

आपका आज्ञाकारी छात्र/छात्रा,
नाम: [अपना नाम]

4.

(i) कवि मैथिलीशरण गुप्त को आघातों की चिंता क्यों नहीं है?

मैथिलीशरण गुप्त को आघातों की चिंता इसलिए नहीं है क्योंकि वे मानते हैं कि जीवन का मार्ग संघर्षों से भरा होता है। वे ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पित हैं और उनका विश्वास है कि यदि उनके मन में सत्य और सेवा की भावना है, तो बाहरी आघात (दुख) उन्हें विचलित नहीं कर सकते। वे कष्टों को अपनी परीक्षा और उन्नति का माध्यम मानते हैं।

(ii) हल्कू ने जबरा को आगे की ठंड काटने के लिए क्या सुझाव दिया?

मुंशी प्रेमचंद की कहानी 'पूस की रात' में, जब ठंड असहनीय हो गई, तो हल्कू ने अपने कुत्ते 'जबरा' को अपने पास बुलाकर अपनी गोद में सुला लिया। उसने जबरा से कहा कि कल से यहाँ मत आना, नहीं तो ठंड से मर जाओगे। उसने मजाक में यह भी कहा कि "आज तो काट लो, कल मैं यहाँ पुआल (घास-फूस) बिछा दूँगा, तब तुम्हें ठंड नहीं लगेगी।"

(iii) कविता के क्या उद्देश्य हैं?

कविता के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

- **भावों की अभिव्यक्ति:** मनुष्य की आंतरिक भावनाओं और संवेदनाओं को शब्दों के माध्यम से प्रकट करना।
- **लोक-मंगल:** समाज को सही दिशा दिखाना और नैतिक मूल्यों की स्थापना करना।
- **आनंद की अनुभूति:** पाठक या श्रोता को रसानुभूति और आत्मिक सुख प्रदान करना।
- **सत्य का उद्घाटन:** जीवन की जटिल सच्चाइयों को सुंदरता और सरलता के साथ प्रस्तुत करना।

(iv) राधा को चंदन भी विषम (विष के समान) क्यों महसूस होता है?

राधा को चंदन इसलिए विषम महसूस होता है क्योंकि वे कृष्ण के वियोग (जुदाई) में तड़प रही हैं। आयुर्वेद और परंपरा के अनुसार चंदन शीतलता (ठंडक) प्रदान करता है, लेकिन विरह की अग्नि में जल रही राधा के लिए हर शीतल वस्तु उसकी मानसिक पीड़ा को बढ़ा देती है। कृष्ण की अनुपस्थिति में सुख देने वाली वस्तुएँ भी उन्हें दुखदायी और कष्टकारी लगती हैं।

(v) कबीर ने 'भर्म' (भ्रम) किसे कहा है?

कबीर दास के अनुसार 'भर्म' वह अज्ञानता है जिसके कारण मनुष्य बाहरी आडंबरों, मूर्ति पूजा, तीर्थ यात्रा और कर्मकांडों में उलझा रहता है। कबीर कहते हैं कि मनुष्य ईश्वर को बाहर खोजता है जबकि वह उसके भीतर ही व्याप्त है। इस सत्य को न पहचान पाना और संसार की माया को ही सच मान लेना ही कबीर की दृष्टि में 'भर्म' है।

5.

(iv) 'भोगे हुए दिन' कहानी का सारांश:

मेहरून्निसा परवेज द्वारा लिखित यह कहानी एक वृद्ध महिला के अकेलेपन और उपेक्षा की मार्मिक कथा है। मुख्य पात्र अपने अतीत के उन 'भोगे हुए दिनों' को याद करती है जब उसका परिवार भरा-पूरा था और घर में उसकी अहमियत थी। समय बदलने के साथ उसके अपने ही बच्चे उसे बोझ समझने लगते हैं। कहानी दर्शाती है कि कैसे आधुनिक पीढ़ी अपने बुजुर्गों की भावनाओं को नजरअंदाज कर उन्हें केवल एक वस्तु समझ लेती है। यह कहानी पीढ़ीगत अंतराल (Generation Gap) और वृद्धावस्था की त्रासदी पर प्रहार करती है।

(v) रोम सम्राट ऑरीलिया ने सूर्य मंदिर को क्यों नष्ट नहीं किया?

रोम के सम्राट ऑरीलिया ने जब पाल्मीरा (Palmyra) पर विजय प्राप्त की, तो उसने शहर को नष्ट करने का आदेश दिया था। लेकिन जब वह वहाँ के प्रसिद्ध **सूर्य मंदिर** के पास पहुँचा, तो उसकी भव्यता, अद्भुत शिल्पकला और सुंदरता देखकर दंग रह गया। उसकी अंतरात्मा ने उसे इतनी सुंदर कलाकृति को तोड़ने से रोक दिया। उसने महसूस किया कि ऐसी महान कला को नष्ट करना मानवता के विरुद्ध अपराध होगा, इसलिए उसने मंदिर को छोड़ दिया।

(vi) लेखक फणीश्वरनाथ रेणु ने कोसी अंचल का परिचय किस तरह दिया है?

फणीश्वरनाथ रेणु ने कोसी अंचल (इलाका) को **'दुख और त्रासदी'** के प्रदेश के रूप में पेश किया है। उन्होंने बताया है कि कोसी नदी (बिहार का शोक) हर साल अपनी बाढ़ से यहाँ के जनजीवन को तहस-नहस कर देती है। रेणु जी ने यहाँ की गरीबी, पिछड़ेपन और बीमारियों (जैसे मलेरिया, कालाजार) का सजीव चित्रण किया है। साथ ही, उन्होंने यहाँ के लोगों की सरलता, लोक-संस्कृति, गीतों और संघर्ष करने की अदम्य शक्ति को भी रेखांकित किया है, जो तमाम अभावों के बावजूद अपनी मिट्टी से जुड़े रहते हैं।